❁ 1 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ **ज्ञान-**

1] निराकार बाप तुम सब आत्माओं का बाप है। सब आत्मायें ड्रामा के सूत्र में बांधी हुई है। सबसे बड़ा पोजीशन बाप का है।

2] अब 84 का चक्र पूरा हुआ, कैसे पूरा हुआ है यह भी तुम समझ गये हो। सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक ऐसे और कोई भी पूछ न सके। मीठे-मीठे लाडले बच्चों से बाबा पूछते हैं, अब घर चलता है ना? घर चलकर फिर सुखधाम में आना है। यह सुखधाम तो नहीं है। यह है पुरानी दुनिया, दु:खधाम। वह है शान्तिधाम, सुखधाम। अब इस दु:ख से मुक्त हो जाना है मुक्तिधाम। मुक्तिधाम अथवा शान्तिधाम जैसेकि सामने खड़े है। वह है घर। फिर तुम नये विश्व में आयेंगे, जहाँ पवित्रता, सुख, शान्ति भी होगी।

3] पांच हजार वर्ष पहले भारत क्या था, अथाह सुख थे। कितना जबरदस्त धन था। यह राज्य उन्होंने कैसे पाया? राजयोग सीथे थे। इसमें लडाई आदि की बात ही नहीं। इनको कहा जाता है ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र। और कोई बात नहीं है। ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र हैं ज्ञान, विज्ञान, याद और ज्ञान के कितने बड़े जबरदस्त अस्त्र-शस्त्र हैं। सारे विश्व पर तुम राज्य करते हो। देवताओं को कहा जाता है अहिंसक।

4] सब तो 84 जन्म ले नहीं सकते। अहिस्ते-अहिस्ते ऊपर से उतरते आते हैं। हम आलराउन्डर हैं। सब काम करने वाले को आलराउन्डर कहा जाता है। तुम भी आलराउन्डर हो। आदि से अन्त तक तुम्हारा पार्ट है। अब इस चक्र का एन्ड है, तो भी ऊपर से आते रहते हैं। बहुत बच्चे रहे हुए हैं जो ऊपर से आते रहते हैं। वृद्धि को पाते रहते हैं।

5] सभी आत्मायें इस ड्रामा के धागे में पिराई हुई हैं। अभी तुम जानते हो हम शुरू में देवता थे, फिर हम सो क्षत्रिय धर्म में आये अर्थात् सूर्यवंशी से चन्द्रवंशी में आये, इतने जन्म लिए– यह सब पता होना चाहिए। यह नॉलेज पहले तुम्हारे में बिल्कुल नहीं थी। अभी बाप ने समझाया है, यह वर्णों की बाजोली है। अभी फिर शूद्र से ब्राह्मण बने हो, ब्राह्मण से फिर देवता बनेंगे। विराट रूप दिखाते हैं ना। तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है– कैसे हम नीचे उतरे फिर ब्राह्मण कुल में आये फिर डीटी डिनायस्टी में आये। अभी तुम ब्राह्मण हो चोटी। चोटी सबसे ऊंच होती है। तुम्हारे जैसा ऊंच कुल कौन कहलावे। भगवान बाप आकर तुमको पढ़ा रहे हैं। तुम कितने भाग्यशाली हो।

6] पढ़ाई न सूक्ष्मवतन में, न मूलवतन में पढ़नी होती है। पढ़ाई होती ही यहाँ है। इसमें मूँझने की तो कोई बात ही नहीं।

7] इस समय तो है प्रजा का प्रजार पर राज्य। राजा-रानी है नहीं। सतयुग में थे, अभी कलियुग अन्त में हैं नहीं। इसको कहा जाता है पंचायती राज्य। गीता में लिख दिया है– कौरव और पाण्डव। रूहानी पण्डे तो तुम हो ना। सबको रूहानी घर का रास्ता बताते हो। वह है तुम आत्माओं का रूहानी घर। रूह जन्म लेकर पार्ट बजाती है। यह बातें तुम्हारे सिवाए और कोई नहीं जानते। ऋषि-मुनि आदि कोई भी न रचता को, न रचता के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। लाखों वर्ष कह देते हैं। परन्तु उनका भी कोई पूरा हिसाब-किताब नहीं है। आधा-आधा भी हो न सके, पूरा आधा सुखधाम फिर पूरा आधा दु:खधाम। यह है पतित दुनिया विशश और वह है वाइसलेस।

8] बाप को कहा जाता है नॉलेजफुल, ब्लिसफुल। सब बातें बाप में फुल हैं इसलिए उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है।

9] हर एक का ड्रामा में जो पार्ट है, वही बजायेंगे। ड्रामा में कोई रीप्लेस हो नहीं सकता। बेहद का ड्रामा है ना। जन्म लेते रहते हैं। सबके फीचर्स अलग-अलग हैं। कितने वैराइटी फीचर्स हैं। यह नॉलेज सारी बुद्धि से समझने की है। कोई किताब आदि है नहीं। गीता का भगवान हाथ में गीता ले आते है क्या? वह तो ज्ञान का सागर है, पुस्तक थोड़ेही ले आया। पुस्तक तो भक्तिमार्ग में बनते हैं। तो यह सब ड्रामा में नूँध है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से।

...2

❁ 1 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

[2]

10] भगवान राजयोग सिखाते हैं अमरपुरी के लिए इसलिए इसको अमरकथा भी कहा जाता है। जरूर संगमयुग पर ही सुनाई होगी। जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है, वही आकर फिर पढ़ेंगे और नम्बरवार पद पायेंगे। तुम यहाँ कितने बार आये हो? अनगिनत। कोई पूछे नाटक कब शुरू हुआ है? तुम कहेंगे यह तो अनादि चला आ रहा है। गिनती की बात हो नहीं सकती, पूछने का ख्याल भी नहीं आता।

11] सतयुग में अनेक भाषायें आदि होती नहीं। एक धर्म, एक भाषा, एक राज्य की तुम स्थापना कर रहे हो।

12] यहाँ तो साइन्स से सुख भी है, दु:ख भी है। इससे सारी दुनिया खलास हो जायेगी, इसको कहा जाता है फॉल ऑफ पाम्पिया। माया का कितना पाम्प है। साहूकारों के लिए तो जैसे स्वर्ग है इसलिए वह तुम्हारी बात भी नहीं सुनते।

13] बाप को जान लिया और स्वर्ग के मालिक बनें। तुम्हारा तो हक है, सबका नहीं क्योंकि स्वर्ग में सब तो नहीं आयेंगा ना।

14] कोई भी परिस्थिति में घबराने के बजाए थोड़े समय के लिए उसे शिक्षक समझो। परिस्थिति आपको विशेष दो शक्तियों के अनुभवी बनाती है एक सहनशक्ति और दूसरा सामना करने की शक्ति। यह दोनों पाठ पढ़ लो तो अनुभवी बन जायेंगे।

15] जिनका मिजाज़ मीठा है वह भूल से भी किसी को दु:ख नहीं दे सकते।

✹ योग-

1] यहाँ तो बाप आकर डायरेक्ट तुमको पढ़ाते हैं। बाहर में तो फिर भी बच्चे पढ़ाते हैं। मित्र सम्बन्धी आदि भी याद आते रहते हैं। यहाँ तो बाप बैठ समझाते हैं। दिन-प्रतिदिन तुम याद की यात्रा में पक्के होते जायेंगे। फिर तुमको कुछ भी याद नहीं आयेगा। सिर्फ घर और राजधानी याद आयेगी। फिर यह नौकरी आदि याद नहीं आयेगी।

✹ धारणा-

1] यह घड़ी-घड़ी स्मृति में लाना चाहिए– हम दूर देश के रहने वाले हैं। हम आत्माओं का घर है ब्रह्माण्ड। यह भी बुद्धि में रहे हम वहाँ रहते हैं, इस आकाश तत्व से पार, जहाँ सूर्य-चांद भी नहीं होते। हम वहाँ के रहने वाले यहाँ पार्ट बजाने आये हैं। 84 का पार्ट बजाते हैं।

2] जब कहते हो हम तो ट्रस्टी हैं, मेरा कुछ नहीं है तो फिर परिस्थितियों से घबराते क्यों हो। ट्रस्टी माना सब कुछ बाप हवाले कर दिया इसलिए जो होगा वह अच्छा ही होगा इस स्मृति से सदा निश्चिंत, समर्थ स्वरूप में रहो।

✹ सेवा-

1] – – –